B-3 & 4
L-2
Ethics

कर्तव्य (Duty)

- जो करने योग्य है या जो किया जाना चाहिए वह कर्तव्य है
- एक प्रशासनिक अधिकारी का कर्तव्य है कि उसे लोगों की समस्याओं का समाधान करना चाहिए।
- एक नैतिक और विवेकशील प्राणी होने के नाते हमें जो करना चाहिए वह कर्तव्य है
- पद, परिस्थिति, अधिकार और सामर्थ्य के अनुसार जो हमें करना चाहिए वह हमारा कर्तव्य है।
- प्रत्येक व्यक्ति का स्वयं के प्रति परिवार के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति कर्तव्य है जो किया जाना चाहिए।
- भारतीय संविधान के भाग IV में 11 मौलिक कर्तव्यों का वर्णन है

सद्गुण (Virtue)

अभ्यास पूर्वक कर्तव्यों का पालन से व्यक्ति में एक विशेष प्रकार का नैतिक गुण विकसित होता है जिसे सद्गुण कहा जाता है

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सद्गुण चरित्र की उत्कृष्टता और आत्मा के नैतिक विकास को दर्शाता है।

- प्लेटो के अनुसार चार मुख्य सद्गुण हैं- साहस, संयम, विवेक एवं न्याय

नीति का आशय क्या है?

नीति का शाब्दिक अर्थ है "ले जाना" इसके चार पक्ष/सन्दर्भ हैं-

1. किसे ले जाना → मानव के आचरण को।
2. कहाँ ले जाना →
   - कर्तव्य के पथ पर ले जाना।
   - कुमार्ग से सन्मार्ग पर ले जाना।
   - असत्य से सत्य की ओर ले जाना।
   - मूल्यपूर्ण रास्ते पर ले जाना
3. कैसे ले जाना → उचित एवं अनुचित के विभेद ज्ञान के माध्यम से
4. क्यों ले जाना → निजी हित एवं सार्वजनिक हित में सामंजस्य स्थापित करने हेतु।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

- समाज में शान्ति एवं व्यवस्था की स्थापना हेतु
- अंधविश्वासों एवं कुरीतियों को दूर करने हेतु।
- सुखद मानवीय जीवन की स्थापना हेतु।

कर्म नियम / कर्मवाद

कर्म नियम के अनुसार अच्छे कर्मों का अच्छा फल और बुरे कर्मों का बुरा फल कर्ता को अवश्य प्राप्त होता है "जैसा बोओगे वैसा काटोगे" की अवधारणा कर्म नियम का समर्थन करती है।

कर्म नियम न्याय की अवधारणा को साकारित करता है।

पुरूषार्थ

प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में चार पुरूषार्थ की बात की गई है-

(i) धर्म → नैतिकता, सदाचार, स्वकर्तव्य-पालन, सामाजिक

(ii) अर्थ → धन सम्पदा को इकट्ठा करना

(iii) काम → सांसारिक सुख, पारिवारिक सुख

(iv) मोक्ष → जीवन का परम लक्ष्य, सुखों की समाप्ति, जन्म मरण की समाप्ति

नैतिक मूल्य
जैसे- दया, करुणा,
प्रेम, सत्य, अहिंसा
त्याग, धैर्य।

- पुरुषार्थ की अवधारणा में व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का भाव निहित है।

मूल्य

नैतिक दृष्टिकोण से मूल्य वे हैं जो वांछनीय है (जो होने चाहिए)
मूल्य वे हैं जिनकी ओर हम अग्रसरित होना चाहते हैं जिसको हम जीवन में साकारित करना चाहते हैं वे मूल्य हैं।
मूल्य वे हैं जिनके आधार पर मानव के आचरण का मूल्यांकन (उचित या अनुचित के रूप में निर्धारण) मूल्यों के आधार पर करते हैं।

- मूल्य मानव जीवन का मार्गदर्शन करते हैं
- मूल्य मानव जीवन को सार्थक एवं गरिमापूर्ण बनाते हैं।
- मूल्यों के विभिन्न प्रकार हैं-

(i) पारिवारिक मूल्य (iii) राजनीतिक मूल्य
(ii) सामाजिक मूल्य (iv) प्रशासनिक मूल्य

पर्यावरणीय मूल्य आदि।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR